

| | | |
|----|---|----|
| 24 | ²⁰ π]ΟΡΕΥΕΣΘΕ ΚΑΙ ΣΤΑΘΕΝΤΕΣ ΛΑΛΕΙ- | 26 |
| 25 | τε εν τω ἱερ]Ω ΤΩ ΛΑΩ ΠΑΝΤΑ ΤΑ | 22 |
| 26 | ρηματα της ζ]ΩΗΣ ΤΑΥΤΗΣ ²¹ ΑΚΟΥ- | 23 |
| 27 | σαντες δε ει]ΣΗΛΘΟΝ ὑΠΟ ΤΟΝ ΟΡ[θ- | 25 |
| 28 | ρον εις το ι]ΕΡΟΝ ΚΑΙ ΕΔΙΔΑΣΚΟΝ | 25 |
| 29 | παραγενομε]ΝΟΣ ΔΕ Ο ΑΡΧΙΕΡΕΥΣ ΚΑΙ | 28 |
| 30 | οι συν αυτω συ]ΝΕΚΑΛΕΣΑΝ ΤΟ ΣΥΝ- | 25 |
| 31 | εδριον και π]ΑΣΑΝ ΤΗΝ ΓΕΡΟΥΣΙ[αν | 26 |
| 32 | των υιων <u>ισρη]Λ</u> ΚΑΙ ΑΠΕΣΤΕΙΛΑΝ | 24 |

Ende der Seite korrekt

Text:

Vorderseite

Beginn der Seite korrekt

ΙΕ

| | | |
|----|---|--|
| 01 | ^{5,3} εἶπεν δὲ ὁ Πέτρος· Ἀνανία, διὰ τί ἐ- | |
| 02 | πλήρωσεν ὁ σατανᾶς τὴν καρδίαν | |
| 03 | σου, ψεύσασθαί σε τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον καὶ | |
| 04 | νοσφίσασθαι ἀπὸ τῆς τιμῆς τοῦ χω- | |
| 05 | ρίου; ⁴ οὐχὶ μένον σοὶ ἔμενεν καὶ πρα- | |
| 06 | θὲν ἐν τῇ σῇ ἐξουσίᾳ ὑπῆρχεν; τί | |
| 07 | ὅτι ἔθου ἐν τῇ καρδίᾳ σου τὸ πρᾶγμα | |
| 08 | τοῦτο; οὐκ ἐψεύσω ἀνθρώποις ἀλλὰ τῷ θεῷ. | |
| 09 | ⁵ ἀκούων δὲ ὁ Ἀνανίας τοὺς λόγους τού- | |